प्रकृति विज्ञान

मित्रता गुणात्मक विस्तार का स्रोत

अशोक मानव

अगस्त के प्रथम सप्ताह के रविवार को मित्रता दिवस के रूप मे मनाया जाता है। मित्रता एक पवित्र सम्बन्ध होता है। जो अपने एहसास को एक दुसरे मे व्यक्त करता है यहीं वह रिस्ता होता है जिसमें व्यक्ति अपने अन्दर कुछ नहीं छुपाता है। हर रिस्ते की अपनी एक सीमा होती है वहीं तक आदमी अपने को व्यक्त कर पाता है पर मित्रता की कोई सीमा नही होती है। मित्रता मन और विचार धारा मिलने के बाद ही होता है। जब दो विचार धारा एक साथ मिल जाती है तभी मित्रता होती है। मित्रता गुणात्मक मिलन है। इस गुणात्मक मिलन से उस गुण का विस्तार होता है। यह विस्तार अपने से सम्बन्धित गुणो को एक कड़ी में जोड़ता जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप एक विचार धारा का मंच बन जाता है जो मानव समाज के लिए काम करता है और अपने विचार का फैलाव पूरी प्रकृति में करता है। जिससे उस गुण का विस्तार पूरी प्रकृति में होता है।गुणात्मक विचार की यह एक प्राकृतिक क्रिया है।गुणात्मक मिलन से ही अध्यात्मिक मंच अपनी विचार धारा का फैलाव समाज पर करते है। यदी सही और सद्मार्गी होता है तो समाज उसे अपनाने लगता है।समाज सुधारक भी गुणात्मक विचार धारा से मित्रता बड़ाते हुए एक मंच बनाकर समाज के हित के लिए काम करते है। राजनितिक दल भी इसी तरह अपनी विचार धारा से अपने गुणो के लोगो को जोड़कर मंच का निर्माण करके सरकार बनाने का कार्य करती है। यदी इनकी विचार धारा लोक कल्याणकारी होती है तो समाज से समर्थन मिलता है जो कानून का रूप ले लेता है। मित्रता और दोस्ती को जादातर लोग एक ही समझते है पर ऐसा नही होता है। मित्रता मन के मिलने से होती है जो गुण और विचार के मिलान करने पर बनतीं है। जब कभी गुण विचार धारा बदलती है तब टुट जाती है। मित्रता गुणात्मक होती है जो जुड़ने के बाद अपने गुणों का विस्तार करती है। मित्रता गुण मिलने के बाद ही होती है। पर दोस्ती दो आत्माओं के एक दुसरे में अन्त होने के बाद होती है। दोस्ती का अर्थ होता है दो आत्माओं के मिलन के बाद एक हो जाना। दोस्ती हो जाने के बाद व्यक्ति एक दुसरे की कमियॉं नहीं खोजता है बल्कि एक दूसरे का साथ देता है। इसमें दोनो की विचार धारा अलग–अलग हो सकती है पर दोनो एक दूसरे का साथ देते रहते है। दोस्ती साथ देने से ही शुरू होती है । जब व्यक्ति परेशान होता है या उसका कोई कार्य नही हो रहा होता है उसका साथ देने वाला दोस्ती का रूप ले लेता है। दोस्ती होने के बाद व्यक्ति सही गलत नहीं देखता बल्कि एक दूसरे का साथ निभाता है। पर सच्चा दोस्त साथ निभाते हुए सद्मार्ग की तरफ ले जाने का प्रयास करता रहता है। दोस्ती और मित्रता लगते एक जैसे है पर दोनो में गुणात्मक भेद होता है। पर दोनो जीवन को सरल बनाते है। इन दोनो में जो मिल जाता है वह जीवन को खुशहाल करता है, सुख, दुख, दर्द को बांटता है और जीवन को आगे बढ़ने मे उत्साहित करता है। इसके मिलने से कार्य करने की झमता बढ़ती है। दोनो का मिलन एक दुसरे की खुशहाली का कार्य करता है। जो मंजिल को आसान बनाता है। पर जितना अधिक खुशी मिलन के बाद मिलती है उससे कहीं अधिक दर्द जुदा होने के बाद होता है। इसे जो भी बनाए सोच समझकर बनाये जो हमेशा चलता रहे कभी जुदा ना होना पड़े। जुदाई का सबसे बड़ा कारण अहंकार होता है जो इसमें कभी नहीं पैदा होना चाहिए।दोस्ती या मित्रता जो भी बनाये हमेशा जुड़े रहने के लिए बनाए जुदा होने के लिए नहीं यदि अलग भी होना पड़े तो जहॉं से शुरू होता है वहीं पर विराम दे दें उसे दुश्मनी मे कभी ना परिवर्तित होने दे। दुश्मनी में बदलने से एक दुसरे की ऊर्जा लड़ने लगती है जिससे विरोधाभाषी घात होता है।विरोधाभाषी घात में अपनी ही ऊर्जा अपने से लड़ने लगती है। ऐसा इस लिए होता है व्यक्ति जब दोस्ती या मित्रता करता है तो अपने दोस्त या मित्र के लिए शुभ सोचता है जो उसके पास सुरक्षा कवच के रूप में कार्यरत होती है जो उसे सुरक्षित करती है और हर कार्य को आगे बढ़ाती है जो ऊर्जा रूप में आपके पास हमेशा बनीं रहती है। और जब व्यक्ति विरोधी बनकर उसके लिए अशुभ सोचता है या उसका नुकसान करना चाहता है तो उस गुण की उर्जा निकलकर वैसा करने का प्रयास करतीं है। जिसे अपनी ही उर्जा से लड़ना पड़ता है। अपनी शुभ उर्जा अपनी ही ऊर्जा को रोकने की क्रिया करती हैं जिसके परिणाम स्वरूप अपनी ही ऊर्जा अपनी ऊर्जा से लड़ने लगती है। जिसका प्रभाव अपने ही शरीर पर पड़ता है जो तनाव और बिमारी का कारण बनता है। इस लिये यदी आप अपने मित्र या दोस्त के लिए अच्छा नहीं सोचते है तो अशुभ भी ना सोचे जहां से शुरू करते है वहीं पर खत्म कर दें। दोस्ती मित्रता का यहीं वैज्ञानिक स्वरूप है जिससे व्यक्ति विरोधाभाषी घात से बचकर अपने को सुरक्षित कर सकता है। सभी की दोस्ती – मित्रता आबाद रहे यहीं अपनी मंगल कामना है। आप सभी को मित्रता दिवश की शुभकामनाएं।।